१०. दर्रे में घमासान युद्‌ध

पन्हाला जीता और आदिलशाह का क्रोध : अफजल खान की हत्या से बीजापुर में खलबली मच गई । उसके बाद तुरंत ही शिवाजी महाराज ने पन्हालगढ़ जो बीजापुर के अधिकार में था, जीत लिया । इससे आदिलशाह बड़ा क्रोधित हुआ । उसे खाना-पीना अच्छा नहीं लग रहा था । शिवाजी महाराज को पराजित करने के लिए उसने सिद्‌दी जौहर नामक सरदार को भेजा । सिद्‌दी जौहर बहुत बड़ी सेना लेकर चल पड़ा । फजल खान भी पिता की हत्या का बदला लेने के लिए उसके साथ निकल पड़ा ।

पन्हालगढ़ को घेर लिया : सिद्‌दी जौहर शूर-वीर पर क्रूर भी था । उसका अनुशासन कठोर था । उसने पन्हालगढ़ को चारों ओर से घेर लिया । शिवाजी महाराज को गढ़ में बंदी बनाया । बरसात के दिन निकट आ गए थे । शिवाजी महाराज ने सोचा कि वर्षा आरंभ होते ही सिद्‌दी जौहर घेरा उठा लेगा परंतु बरसात प्रारंभ होते ही उसने घेरा अधिक कड़ा कर दिया । किले में जो धन-धान्य था; वह समाप्त होने लगा । अब क्या करें ? यह शक्ति का काम नहीं है ! तब शिवाजी महाराज ने युक्ति से छुटकारा पाने का निश्चय किया । उन्होंने सिद्‌दी जौहर के पास संदेश भेजा कि 'शीघ्र ही किला आपके अधीन करता हूँ ।' वह प्रसन्न हुआ । उसने इस बात को स्वीकार कर लिया ।

घेरे से सिद्‌दी की सेना तंग आ गई थी । यह सुनकर सैनिक खुश हो गए कि शिवाजी महाराज शरण में आ रहे हैं ! वे खाने-पीने, गाने-बजाने और हुक्का-पानी में मग्न हो गए ।

शिवाजी महाराज घेरे से बाहर : शिवाजी महाराज ने घेरे से बाहर निकलने के लिए एक युक्ति सोची । योजना इस प्रकार थी - उन्होंने दो डोलियाँ तैयार करवाईं । एक डोली में बैठकर शिवाजी महाराज दुर्गम रास्ते से बाहर निकलेंगे और दूसरी में शिवाजी महाराज का स्वाँग भरनेवाला एक आदमी बैठकर महाद्‌वार के छोटे दरवाजे से बाहर निकलेगा । यह दूसरी डोली शत्रु सेना को सहज दिखाई देगी इसलिए वह पकड़ी जाएगी और शत्रु यह समझकर खुशी से झूम उठेंगे कि शिवाजी महाराज ही पकड़े गए हैं । इस बीच शिवाजी महाराज दुर्गम रास्ते से बाहर खिसक जाएँगे लेकिन शिवाजी महाराज का स्वाँग भरेगा कौन ? ऐसा स्वाँग भरना मौत के मुँह में जाना था लेकिन एक बहादुर जवान तैयार हो गया । दीखने में वह शिवाजी महाराज जैसा था और उसका नाम भी शिवाजी ही था । वह शिवाजी महाराज की सेवा में केशभूषा करनेवाला सेवक था । वह बड़ा साहसी और चतुर था ।

स्वाँग भरे हुए शिवाजी की डोली छोटे दरवाजे से बाहर निकल गई । रात का समय था । मूसलाधार बारिश हो रही थी फिर भी शत्रुओं की सेना पहरा दे रही थी । उन्होंने उस डोली को पकड़ लिया । शिवाजी महाराज को ही पकड़ लिया; यह मानकर वे उस डोली को

सिद्दी जौहर की छावनी में ले गए । वहाँ सभी प्रसन्नता से नाचने-गाने लगे । इसी बीच शिवाजी महाराज दुर्गम रास्ते द्वारा गढ़ से बाहर निकल गए । साथ में बाजीप्रभु देशपांडे और उनके गिने-चुने सैनिक थे । उन्हीं के साथ बांदल देशमुख की सेना थी । इधर कुछ ही समय में उस शिवाजी का नकली रूप सामने आ गया । तब गुस्से में आकर सिद्दी ने उसे तुरंत मार डाला । शिवाजी महाराज के लिए, स्वराज्य के लिए इस शिवाजी ने आत्मबलिदान दिया । वह अमर हो गया ।

शिवाजी महाराज आँखों में धूल झोंककर खिसक गए, यह बात सिद्दी के ध्यान में आते ही वह तिलमिला उठा । उसने बड़ी तत्परता से अपने सरदार सिद्दी मसऊद को विशाल फौज के साथ शिवाजी महाराज का पीछा करने के लिए भेज दिया । पीछा शुरू हुआ । दिन निकलते ही उन्होंने शिवाजी महाराज को पांढरपाणी के झरने के पास पा लिया । शिवाजी महाराज उलझन में पड़ गए । उन्होंने बड़ी कठिनाई से घोड़ दर्रा पार किया ।

बाजीप्रभु का बाँकपन : झल्लाए हुए सिद्दी के सैनिक बड़ी तेजी से दर्रे की ओर बढ़े आ रहे थे । शिवाजी महाराज ने सोचा कि अब विशालगढ़ पहुँचना कठिन है । उन्होंने बाजीप्रुभ से कहा, ''बाजी, समय बड़े संकट का है । आगे चढ़ाई है । पीछे शत्रु है । अब विशालगढ़ तक पहुँचना कठिन है । चलो, पीछे लौटकर शत्रु का मुकाबला करते हैं ।'' बाजीप्रभु शिवाजी महाराज के मन में उत्पन्न दुविधा को जान गए । शत्रु बिफरकर दर्रे की दिशा में आ रहा था । शिवाजी महाराज का जीवन खतरे में था । संपूर्ण स्वराज्य खतरे में था । बाजीप्रभु ने अधीर होकर शिवाजी महाराज से कहा, ''महाराज, आप कुछ सैनिकों के साथ विशालगढ़ की ओर चलिए । बचे हुए सैनिकों के साथ मैं दर्रे के मुँह पर खड़ा रहता हूँ । महाराज, मैं मर जाऊँगा पर शत्रु को दर्रा पार करने न दूँगा । एक 'बाजी' गया तो आपको दूसरा मिलेगा लेकिन स्वराज्य को शिवाजी महाराज की जरूरत है । शत्रुओं की संख्या अधिक है । हम संख्या में कम हैं । यहाँ हम टिक नहीं सकेंगे । आप यहाँ न रुकिए । हम दर्रे पर डटे रहेंगे । शत्रु को हम यहीं रोक लेंगे । जब तक आप गढ़ पर नहीं पहुँचते हैं, तब तक हम शत्रु को यहीं रोक रखते हैं । आप निश्चिंत होकर जाइए ।'' बाजीप्रभु की स्वामिभक्ति देखकर शिवाजी महाराज का मन भर आया । बाजीप्रभु जैसा रत्न खोना उन्हें स्वीकार नहीं था किंतु उन्हें स्वराज्य के लक्ष्य तक पहुँचना था । उन्होंने अपने मन को समझाया । शिवाजी महाराज ने बाजीप्रभु को बड़े प्यार से गले लगाया और कहा, ''हम गढ़ पर जाते हैं । वहाँ पहुँचते ही तोपों की आवाज होगी फिर दर्रा छोड़कर आप तुरंत चले आना ।''

बाजीप्रभु ने शत्रु को रोका : बाजीप्रभु को दर्रे में छोड़कर शिवाजी महाराज विशालगढ़ की ओर बढ़े । बाजीप्रभु ने शिवाजी महाराज को झुककर प्रणाम किया । फिर उसने अपने हाथ में तलवार ली और वह दर्रे के मुँह पर आ खड़ा हुआ । उसने मावलों की टोलियाँ बनाईं । उनके स्थान निर्धारित किए । मावलों ने गिट्टी-पत्थर इकट्ठे किए और पूरी तैयारी के साथ अपनी-

घोड़ दर्रे में शिवाजी महाराज और बाजीप्रभु देशपांडे

अपनी जगहों पर जा खड़े हुए । दर्रे के मुँह पर मावलों की फौलादी दीवार खड़ी हो गई । इसी समय शत्रु के युद्ध के नारे सुनाई पड़े । शत्रु दर्रे के नीचे आ गया था । बाजीप्रभु ने मावलों से कहा, ''बहादुर सैनिको, सावधान ! प्राण भले ही त्याग दो पर अपने-अपने स्थान पर डटे रहो । शत्रु दर्रा पार न करने पाए ।'' बाजीप्रभु और उसके मावले साथी दर्रे के मुँह पर पैर जमाकर खड़े हो गए । दर्रे का मार्ग कठिन और टेढ़ा-मेढ़ा था । एक साथ तीन-चार आदमी मुश्किल से ऊपर चढ़ सकते थे ।

उधर शिवाजी महाराज विशालगढ़ की ओर हवा की तरह बढ़े जा रहे थे । विशालगढ़ का किला अभी दूर था । गढ़ पर पहुँचने के लिए शिवाजी महाराज को डेढ़-दो-घंटे का समय और चाहिए था । उतनी देर तक यदि बाजीप्रभु दर्रे के मुँह पर शत्रु से संघर्ष करता रहा तो शिवाजी महाराज की विजय निश्चित थी ।

दर्रे में युद्ध : दर्रे में घमासान युद्ध शुरू हुआ । शत्रु की सेना दर्रा चढ़ने लगी । शत्रु की पहली टुकड़ी दर्रे में आकर रुक गई । मावलों ने शत्रु पर पत्थरों की वर्षा शुरू की । पत्थर बरसाने में मावले होशियार थे । वे चतुराई से युद्ध करने लगे । शिवाजी महाराज के मावलों ने कई शत्रुओं का सफाया किया । कई सैनिकों के सिर फूट गए । पहली टुकड़ी पराजित हुई । वह पीछे हटी । फिर दूसरी टुकड़ी बड़े उत्साह से दर्रा चढ़ने लगी । बाजीप्रभु चिल्ला उठा, ''मारो, काटो !'' मावले जोश से भर उठे । 'हर-हर महादेव', का नारा लगाते हुए वे शत्रु पर टूट पड़े । पत्थरों की वर्षा शुरू हुई । शत्रु धड़ाधड़ गिरने लगे । जोश के साथ बाजीप्रभु चिल्लाया, ''शाबाश, मेरे वीर सिपाहियो ! और पत्थर बरसाओ । शत्रु को मारो । जोर से प्रहार करो । शाबाश ।'' दूसरी टुकड़ी नष्ट हुई ।

उधर घोड़े पर सवार शिवाजी महाराज विशालगढ़ की ओर तेजी से बढ़ते जा रहे थे । गढ़ की सीमा निकट आ रही थी । प्रत्येक क्षण बड़ा ही महत्त्वपूर्ण था । विशालगढ़ के नीचे शत्रुओं की घेरा बंदी थी । शिवाजी महाराज ने कुछ चुने हुए साथियों के साथ शत्रु पर आक्रमण कर दिया । शत्रु सैनिकों से मुकाबला करते हुए शिवाजी महाराज आगे बढ़े । वे अपने मावलों के साथ शत्रु के घेरे को तोड़कर विशालगढ़ की ओर बढ़ रहे थे ।

बाजीप्रभु का पराक्रम : यहाँ घोड़ दर्रे में घमासान चल रहा था । सिद्दी मसऊद क्रुद्ध हो उठा था । उसकी तीसरी टुकड़ी दर्रा चढ़ने लगी । मराठों ने अपूर्व वीरता का परिचय दिया । शत्रु ने बाजीप्रभु पर हमला किया । उसको घेर लिया । बाजीप्रभु आवेश से लड़ने लगा, उसने अद्‌भुत पराक्रम दिखाया । बाजीप्रभु के शरीर पर बहुत प्रहार हुए थे । अंग-अंग पर घाव लगे थे । शरीर से खून की धाराएँ बहने लगी थीं फिर भी वह अपने स्थान पर अडिग रहा । उसका सारा शरीर खून से लथपथ हो गया था । मगर वह पीछे नहीं हटा । उसने मावलों को ऊँची आवाज में आदेश दिया । मावलों ने बड़े जोश के साथ शत्रु पर धावा बोल दिया । शत्रु पीछे हटा । बाजीप्रभु घायल हो गया था । फिर भी युद्ध जारी रखने के लिए वह मावलों को प्रेरणा दे रहा था । उसका सारा ध्यान तोपों की आवाजों की ओर लगा था ।

वह पावन दर्रा : उसी समय तोप की आवाज हुई । युद्‌ध भूमि में गिरे हुए बाजीप्रभु के कानों में तोपों की आवाज सुनाई पड़ी ''महाराज गढ़ पर पहुँच गए । मैंने अपना कर्तव्य पूरा किया । अब मैं प्रसन्नता से मरता हूँ ।'' कहकर स्वामिभक्त बाजीप्रभु ने प्राण त्याग दिए । जब विशालगढ़ पर महाराज को इस बात का पता चला तब उन्हें बहुत दुख हुआ और उन्होंने कहा ''बाजीप्रभु देशपांडे स्वराज्य के लिए शहीद हुए । बांदल के लोगों ने पराकाष्ठा का युद्‌ध किया ।''

बाजीप्रभु जैसे देशभक्तों के कारण ही स्वराज्य आगे बढ़ा । उस स्वामिभक्त के रक्त से घोड़ दर्रा पवित्र हुआ । 'पावन दर्रा' के नाम से यह दर्रा इतिहास में अमर हुआ । धन्य थे वे वीर और धन्य था बाजीप्रभु ।

स्वाध्याय

१. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

(अ) सिद्‌दी जौहर ने .... गढ़ को चारों तरफ से घेर लिया था ।

(आ) बाजीप्रभु की .... देखकर शिवाजी महाराज का मन भर आया ।

(इ) घोड़ दर्रा .... नाम से इतिहास में अमर हुआ ।

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) शिवाजी महाराज ने पन्हालगढ़ के घेरे से निकलने के लिए सिद्‌दी जौहर को कौन-सा संदेश भेजा ?

(आ) सिद्‌दी जौहर क्यों क्रुद्‌ध हुआ ?

(इ) विशालगढ़ की ओर जाते समय शिवाजी महाराज ने बाजीप्रभु से क्या कहा ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) पन्हालगढ़ के घेरे से निकलने के लिए शिवाजी महाराज ने कौन-सी योजना बनाई ?

(आ) बाजीप्रभु ने शत्रु को घोड़ दर्रे में रोकने के लिए कौन-सी योजना बनाई ?

४. कारण लिखो :

(अ) आदिलशाह बहुत क्रोधित हुआ ।

(आ) शिवाजी महाराज की सेवा में नियुक्त शिवाजी अमर हो गया ।

(इ) पावन दर्रा इतिहास में अमर हुआ ।

५. कौन ?.... वह लिखो :

(अ) शूर-वीर परंतु क्रूर था ------ ।

(आ) घोड़ दर्रे में घमासान युद्‌ध करने वाला ------ ।

(इ) घेरे से निकल जाने वाले ------ ।

उपक्रम

शिवाजी महाराज की सेवा में नियुक्त स्वामिभक्त सैनिकों की अधिक जानकारी अपने शिक्षकों की सहायता से इकट्‌ठा करो ।

6IMBXH